

महादेवी वर्मा के साहित्य में वेदना की अनुभूति और रहस्यवाद

रजनी देवी

शोधार्थी ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर

डॉ राजबाला

शोध निर्देशिका ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर

सार

महादेवी वर्मा के साहित्य में वेदना और रहस्यवाद का गहरा और अद्वितीय समन्वय दिखाई देता है। महादेवी वर्मा छायावाद युग की प्रमुख कवयित्री थीं, जिनकी रचनाओं में अंतर्मन की पीड़ा, आध्यात्मिक खोज और अनंत के प्रति आकर्षण स्पष्ट रूप से व्यक्त होता है। उनकी वेदना केवल व्यक्तिगत दुख तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सार्वभौमिक और आध्यात्मिक वेदना के रूप में प्रकट होती है। यह वेदना आत्मा और परमात्मा के बीच के विरह की अनुभूति से जुड़ी है, जिसमें एक गहन संवेदनशीलता और करुणा निहित होती है। उनकी कविताओं में यह पीड़ा एक मधुर पीड़ा (sweet pain) के रूप में उभरती है, जो सृजन का आधार बनती है। रहस्यवाद की दृष्टि से, महादेवी वर्मा का काव्य आत्मा और परम सत्य के बीच संबंध की खोज को अभिव्यक्त करता है। उनके काव्य में प्रतीकात्मकता, अलौकिकता और आध्यात्मिक अनुभूति का समावेश है, जो पाठक को एक गूढ़ और सूक्ष्म संसार में ले जाता है। वे प्रकृति, विरह और मौन के माध्यम से उस अनंत सत्ता का संकेत देती हैं, जिसे प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त करना संभव नहीं है। इस प्रकार, महादेवी वर्मा के साहित्य में वेदना और रहस्यवाद एक-दूसरे के पूरक हैं। उनकी वेदना आत्मिक उत्कंठा को जन्म देती है, जबकि रहस्यवाद उस उत्कंठा को एक आध्यात्मिक दिशा प्रदान करता है। यही कारण है कि उनका काव्य भावनात्मक गहराई और आध्यात्मिक ऊँचाई का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: महादेवी वर्मा, वेदना, साहित्य, अनुभूति

परिचय

महादेवी वर्मा आधुनिक हिंदी साहित्य में एक केंद्रीय और विशिष्ट स्थान रखती हैं, विशेष रूप से 'छायावाद' युग के चार स्तंभों में से एक के रूप में। उनकी साहित्यिक रचनाएँ भावनाओं की गहरी संवेदनशीलता से ओत-प्रोत हैं, जहाँ 'वेदना' (पीड़ा) का अनुभव और 'रहस्यवाद' का सार आपस में गहराई से गुंथे हुए हैं। दुख की पारंपरिक अभिव्यक्तियों के विपरीत, महादेवी वर्मा द्वारा पीड़ा का चित्रण व्यक्तिगत शोक से परे जाकर एक सार्वभौमिक और आध्यात्मिक आयाम प्राप्त कर लेता है। उनकी रचनाएँ यह दर्शाती हैं कि कष्ट केवल एक भावनात्मक स्थिति नहीं है, बल्कि एक परिवर्तनकारी शक्ति है जो व्यक्ति को आंतरिक जागरण और आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाती है। उनके साहित्य में वेदना का विषय गहरे अकेलेपन, विरह और एक शाश्वत—अक्सर अदृश्य—प्रिय के लिए अधूरी लालसा से उत्पन्न होता

है। यह लालसा केवल सांसारिक संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिक खोज तक विस्तृत है, जो रहस्यवाद के प्रति उनके झुकाव को दर्शाती है। उनकी कविताएँ अक्सर एक गहन आंतरिक संवाद को चित्रित करती हैं, जहाँ आत्मा एक उच्चतर, पारलौकिक सत्ता के साथ मिलन की अभिलाषा करती है। इस संदर्भ में, उनके कार्यों में रहस्यवाद केवल अमूर्त या दार्शनिक ही नहीं है; बल्कि यह भावनात्मक तीव्रता और आध्यात्मिक उत्कंठा द्वारा निर्मित, अत्यंत अनुभवात्मक है। महादेवी वर्मा की प्रमुख रचनाएँ—जैसे 'यामा' और 'नीरजा'—समृद्ध प्रतीकों, गीतात्मक सौंदर्य और भावपूर्ण बिंबों के माध्यम से वेदना और रहस्यवाद के इस अद्भुत समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। उनकी भाषा सूक्ष्म होते हुए भी अत्यंत सशक्त है, जो जटिल भावनात्मक और आध्यात्मिक स्थितियों को असाधारण स्पष्टता के साथ व्यक्त करने में सक्षम है। इसके अतिरिक्त, एक महिला लेखिका के रूप में उनका दृष्टिकोण पीड़ा के चित्रण में एक अद्वितीय आयाम जोड़ता है; जहाँ दर्द केवल निराशा का स्रोत न बनकर, शक्ति, सहनशीलता और रचनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाता है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य यह अन्वेषण करना है कि महादेवी वर्मा किस प्रकार व्यक्तिगत वेदना को एक रहस्यमयी अनुभव में रूपांतरित करती हैं, और इस प्रकार साहित्यिक तथा दार्शनिक संदर्भों में पीड़ा की भूमिका को पुनर्परिभाषित करती हैं। उनकी काव्य-दृष्टि और विषयगत सरोकारों का विश्लेषण करके, यह अध्ययन मानवीय भावनाओं और आध्यात्मिक चेतना के मध्य विद्यमान गहरे संबंधों को समझने में उनके कार्य की चिरंतन प्रासंगिकता को रेखांकित करने का प्रयास करता है।

ऐतिहासिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि

महादेवी वर्मा का साहित्यिक योगदान उस बौद्धिक और सांस्कृतिक जागृति के भीतर स्थित होना चाहिए जो बीसवीं सदी के शुरुआती भारत की विशेषता थी। छायावाद युग पहले की हिंदी कविता के कठोर, उपदेशात्मक और अक्सर राष्ट्रवादी स्वर के खिलाफ एक प्रतिक्रिया के रूप में उभरा, जिसने इसके बजाय अभिव्यक्ति की एक गहरी व्यक्तिगत, गीतात्मक और आत्मनिरीक्षण शैली का परिचय दिया। पश्चिमी रूमानीयता के साथ-साथ वेदांत और भक्ति जैसी स्वदेशी दार्शनिक परंपराओं से प्रभावित, छायावाद ने व्यक्तिगत स्व की स्वायत्तता, प्रकृति की सुंदरता और आंतरिक चेतना की खोज पर जोर दिया। इस साहित्यिक माहौल में, महादेवी वर्मा ने न केवल अपनी काव्य प्रतिभा के माध्यम से, बल्कि अपनी अद्वितीय स्त्री संवेदना के माध्यम से भी खुद को प्रतिष्ठित किया। ऐसे समय में जब महिलाओं की आवाज़ को अक्सर हाशिए पर रखा जाता था, उन्होंने मानवीय भावनाओं पर एक गहरा व्यक्तिगत लेकिन सार्वभौमिक रूप से गूंजने वाला दृष्टिकोण व्यक्त किया। उनकी रचनाएँ औपनिवेशिक भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों को दर्शाती हैं, जिसमें नए शैक्षिक अवसरों का उद्भव और बदलती लैंगिक भूमिकाएँ शामिल हैं। हालाँकि, राजनीतिक प्रवचन में सीधे शामिल होने के बजाय, वर्मा की कविता भावनात्मक और आध्यात्मिक वास्तविकताओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मानव अस्तित्व के सूक्ष्म आयामों पर प्रकाश डालती है। यह आंतरिक अभिविन्यास, उनकी परिष्कृत सौंदर्य संवेदनशीलता के साथ मिलकर, उनके काम को पीढ़ियों तक कालातीत और प्रासंगिक बनाता है।

वर्मा के साहित्य में पीड़ा की अवधारणा

महादेवी वर्मा के साहित्यिक जगत में वेदना का केन्द्रीय एवं निर्णायक स्थान है। उनकी कविता अकेलेपन, लालसा और भावनात्मक पीड़ा की गहरी भावना से भरी हुई है, जिसे अक्सर नाजुक और विचारोत्तेजक कल्पना के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। हालाँकि, यह पीड़ा व्यक्तिगत दुःख या जीवनी संबंधी अनुभव तक सीमित नहीं है; बल्कि, इसे एक सार्वभौमिक स्तर तक ऊपर उठाया गया है, जो मानव अस्तित्व की अंतर्निहित अपूर्णता का प्रतीक है। उनकी कविता में विरह (पृथक्करण) का आवर्ती रूप इस अस्तित्वगत स्थिति के लिए एक शक्तिशाली रूपक के रूप में कार्य करता है। यह न केवल प्रेमियों के बीच अलगाव को दर्शाता है बल्कि व्यक्तिगत आत्मा और परम वास्तविकता के बीच की

दूरी को भी दर्शाता है। इस प्रकार उसकी पीड़ा भावनात्मक और आध्यात्मिक दोनों है, जो जीवन की क्षणिक और मायावी प्रकृति के बारे में गहन जागरूकता को दर्शाती है। महत्वपूर्ण बात यह है कि वर्मा पीड़ा को केवल नकारात्मक या विनाशकारी के रूप में चित्रित नहीं करते हैं। इसके बजाय, वह इसे रचनात्मक प्रेरणा और दार्शनिक अंतर्दृष्टि के स्रोत में बदल देती है। उनकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से पीड़ा आत्म-खोज और आंतरिक जागृति का साधन बन जाती है। यह संवेदनशीलता को तेज करता है, धारणा को गहरा करता है, और व्यक्ति को सतही वास्तविकताओं से परे अर्थ खोजने के लिए मजबूर करता है। इस तरह, वर्मा दर्द को मानव अस्तित्व के एक आवश्यक और रचनात्मक तत्व के रूप में फिर से परिभाषित करते हैं, जो विकास, आत्मनिरीक्षण और आध्यात्मिक जागरूकता को बढ़ावा देता है।

रहस्यवाद और आध्यात्मिक खोज

रहस्यवाद महादेवी वर्मा के कार्यों का एक और मौलिक आयाम है। उनकी कविता एक अदृश्य, पारलौकिक उपस्थिति के साथ मिलन की तीव्र इच्छा को दर्शाती है, जिसे अक्सर एक शाश्वत या दिव्य प्रिय के रूप में वर्णित किया जाता है। यह रहस्यमय लालसा भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं, विशेष रूप से भक्ति आंदोलन में गहराई से निहित है, जो व्यक्तिगत भक्ति और परमात्मा के साथ भावनात्मक संबंध पर जोर देती है। हालाँकि, वर्मा का रहस्यवाद किसी विशिष्ट धार्मिक सिद्धांत या संस्थागत ढाँचे तक सीमित नहीं है। यह अत्यधिक व्यक्तिवादी और अनुभवात्मक है, जो उसके आंतरिक भावनात्मक और आध्यात्मिक जीवन से उत्पन्न होता है। उनकी कविता में परमात्मा मायावी और अमूर्त बना हुआ है, जिससे सतत लालसा और अपूर्णता की भावना पैदा होती है। यह अधूरी इच्छा उसकी आध्यात्मिक खोज के पीछे प्रेरक शक्ति बन जाती है, जो कवि को आत्म-जागरूकता और अतिक्रमण के गहरे स्तर की ओर प्रेरित करती है। उनकी रहस्यमय दृष्टि में अक्सर बाह्य (बाहरी) से आंतरिक (आंतरिक) तक, भौतिक से आध्यात्मिक तक की गति शामिल होती है। प्रकृति इस यात्रा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, एक प्रतीकात्मक माध्यम के रूप में कार्य करती है जिसके माध्यम से दिव्य उपस्थिति को महसूस किया जाता है। उनकी कविता में प्रकाश और अंधकार, ध्वनि और मौन, उपस्थिति और अनुपस्थिति की परस्पर क्रिया इस रहस्यमय अनुभव की जटिलता को दर्शाती है। अंततः, उनका काम आध्यात्मिक खोज को एक सतत प्रक्रिया के रूप में चित्रित करता है, जो लालसा और पूर्ति, अनुपस्थिति और उपस्थिति दोनों द्वारा चिह्नित है।

पीड़ा और रहस्यवाद के बीच अंतर्संबंध

महादेवी वर्मा के साहित्य का सबसे विशिष्ट पहलू वेदना और रहस्यवाद के बीच का जटिल संबंध है। इन्हें अलग या विरोधी विषयों के रूप में मानने के बजाय, वह इन्हें एक एकीकृत दार्शनिक दृष्टि में एकीकृत करती है। उनके कार्यों में, पीड़ा रहस्यमय अनुभव की नींव बन जाती है, आध्यात्मिक जागृति के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है। अलगाव का दर्द मिलन की इच्छा को तीव्र कर देता है, चाहे वह किसी मानवीय प्रियतम से हो या किसी दिव्य इकाई से। यह भावनात्मक तीव्रता व्यक्ति की सांसारिक अस्तित्व की सीमाओं के बारे में जागरूकता को गहरा करती है और पारलौकिक की ओर एक मोड़ को प्रोत्साहित करती है। इस प्रकार, पीड़ा अपने आप में कोई अंत नहीं है, बल्कि परिवर्तन का एक साधन है, जो चेतना और अंतर्दृष्टि के उच्च स्तर की ओर ले जाती है। वर्मा की कविता बताती है कि सच्ची आध्यात्मिक अनुभूति केवल दर्द और लालसा के अनुभव से ही संभव है। आत्मा की शुद्धि पीड़ा के माध्यम से होती है, जो सतही जुड़ाव को दूर कर देती है और गहरी सच्चाइयों को उजागर करती है। भावनात्मक गहराई और आध्यात्मिक आकांक्षा का यह संश्लेषण एक अद्वितीय काव्यात्मक ढाँचा बनाता है जिसमें मानव और परमात्मा के बीच की सीमाएँ

तेजी से धुंधली हो जाती हैं। इस प्रकार उनका काम अस्तित्व की समग्र दृष्टि का प्रतीक है, जहां पीड़ा और रहस्यवाद एक ही अनुभवात्मक सातत्य के तत्वों को परस्पर मजबूत कर रहे हैं।

दार्शनिक एवं साहित्यिक महत्व

महादेवी वर्मा का साहित्यिक और दार्शनिक महत्व छायावाद आंदोलन की सीमाओं से कहीं आगे तक फैला हुआ है। उनकी रचनाएँ जीवन, पीड़ा, पहचान और अर्थ की खोज से संबंधित मौलिक अस्तित्व संबंधी प्रश्नों की गहन खोज का प्रतिनिधित्व करती हैं। व्यक्तिगत भावनाओं को सार्वभौमिक आध्यात्मिक विषयों के साथ एकीकृत करके, वह कविता को आत्म-अन्वेषण और अतिक्रमण के एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में विकसित करती है। एक रचनात्मक और परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में पीड़ा का उनका उपचार पीड़ा की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देता है, इसके बजाय एक अधिक सूक्ष्म और दार्शनिक समझ प्रदान करता है। इसी तरह, उनकी रहस्यमय दृष्टि व्यक्ति और परमात्मा के बीच संबंधों को समझने के लिए एक गहन व्यक्तिगत लेकिन सार्वभौमिक रूप से सुलभ रूपरेखा प्रदान करती है। इसके अलावा, लैंगिक प्रतिनिधित्व के मामले में वर्मा का हिंदी साहित्य में योगदान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। एक प्रमुख महिला आवाज़ के रूप में, उन्होंने साहित्यिक अभिव्यक्ति में एक नई संवेदनशीलता और गहराई लाई, जिससे महिला लेखकों की भावी पीढ़ियों के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ। उनकी रचनाएँ विद्वानों, आलोचकों और पाठकों को समान रूप से प्रेरित करती रहती हैं, न केवल उनकी सौन्दर्यात्मक सुंदरता के लिए बल्कि उनकी गहन दार्शनिक अंतर्दृष्टि के लिए भी। इस अर्थ में, महादेवी वर्मा आधुनिक भारतीय साहित्य में सबसे प्रभावशाली और आत्मविश्लेषणी शख्सियतों में से एक हैं, जिनकी विरासत स्थायी और परिवर्तनकारी बनी हुई है।

महादेवी की काव्यगत विशेषताएँ

महादेवी वर्मा रहस्यवाद (*रहस्यवाद*) और स्वच्छंदतावाद (*छायावाद*) की कवयित्री थीं; परिणामस्वरूप, आत्मा और परमात्मा की परस्पर क्रिया – उनका मिलन और अलगाव – साथ ही प्रकृति की विभिन्न अभिव्यक्तियाँ, उनकी कविता में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं। पीड़ा और पीड़ा महादेवी की कविता की आत्मा रही है; वास्तव में, उनकी संपूर्ण काव्य कृति करुणा में डूबी हुई है। उन्हें निराशावाद या पीड़ा की कवयित्री के रूप में जाना जाता है। वह स्वयं लिखती हैं: "मेरे लिए दुख जीवन काव्य का वह रूप है जो संपूर्ण विश्व को एक सूत्र में बांधने की क्षमता रखता है।" उनकी कविताएँ एक अनंत चेतना के विलाप से गुंजती हैं – एक चेतना जो सीमित सीमाओं के बंधन में बंधी हुई है। यह पीड़ा आध्यात्मिक क्षेत्र से संबंधित है, जो सांसारिक पीड़ा से अलग है; यह केवल उन लोगों के लिए सहज रूप से सुलभ है जिन्होंने स्वयं आध्यात्मिक अनुभव के उस विशिष्ट क्षेत्र में प्रवेश किया है। संयोग से, महादेवी "दुःख" शब्द का प्रयोग उस पीड़ा के लिए भी करती हैं जो "पूरी दुनिया को एक सूत्र में बांधने की क्षमता रखती है" (हालांकि, आमतौर पर, जो दुःख दुनिया को एक साथ बांधता है वह सांसारिक पीड़ा है – भारतीय साहित्य की परंपरा में *करुणा रस* की *स्थयी भव* [प्रमुख भावना])। हालाँकि, महादेवी ने पीड़ा के इस बाद वाले रूप को स्वीकार नहीं किया। वह कहती है: "दुख के दोनों रूप मुझे प्रिय हैं: एक जो संवेदनशील मानव हृदय को अविभाज्य बंधनों के माध्यम से पूरी दुनिया से बांधता है, और दूसरा – समय और सीमा के बंधन में कैद अनंत चेतना का विलाप।" फिर भी, उनकी कविता में, यह पहले प्रकार का दुःख नहीं है, बल्कि बाद वाला "विलाप" है जो अभिव्यक्ति पाता है। पीड़ा का यह विशिष्ट रूप सामान्य मानव हृदय के लिए सुलभ भावना नहीं है। शायद इसी कारण से, रामचन्द्र शुक्ल ने इसकी प्रामाणिकता पर संदेह जताते हुए लिखा है: "इस पीड़ा को चित्रित करते हुए, उन्होंने हृदय के भावनात्मक अनुभवों को प्रस्तुत किया है जो सांसारिक दायरे से परे हैं। ये किस हद तक वास्तविक अनुभवों का प्रतिनिधित्व करते हैं, और किस हद तक वे ऐसे अनुभवों का एक आकर्षक काव्य निर्माण मात्र हैं, यह निर्धारित करना असंभव है।" यह

इसी आध्यात्मिक वेदना के पथ पर है – शुरू से अंत तक – कि कोई महादेवी की कविता के भीतर सूक्ष्म और गहन भावनात्मक बारीकियों के विकास और विस्तार को देख सकता है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, वास्तव में, उनकी कविता में व्यक्त पीड़ा को पौराणिक मीरा की काव्य पीड़ा से भी अधिक तीव्र मानते हैं।

महादेवी का रहस्यवाद

छायावादी काव्य में एक आध्यात्मिक आवरण तथा छाया रही है। अतः रहस्यवाद छायावादी कविता के प्रवृत्ति विशेष के लिए प्रयुक्त किया गया। महादेवी जी के अनुसार 'रहस्य का अर्थ वहाँ से होता है जहाँ धर्म की इति है। रहस्य का उपासक हृदय में सामंजस्यमूलक परमतत्व की अनुभूति करता है और वह अनुभूति परदे के भीतर रखते हुए दीपक के समान अपने प्रशांत आभास से उसके व्यवहार को स्निग्धता देती हैं। महादेवी जी की रुचि सांसारिक भोग की अपेक्षा आध्यात्मिकता की ओर अधिक दर्शित होती हैं। रहस्यानुभूति की पाँच अवस्थाएँ उनके काव्य में लक्षित होती हैं। जिज्ञासा, आस्था, अद्वैतभावना, प्रणयानुभूति विरहानुभूति। महादेवी जी में उस परमतत्व को देखने की, जानने की निरंतर जिज्ञासा रही हैं। वह कौतूहल से पूछती हैं-

'कौन तुम मेरे हृदय में

कौन मेरी कसक में नित मधुरता भरता अलक्षित?"

उनकी अज्ञात प्रियतम के प्रति आस्था केवल बौद्धिक न होकर रागात्मक है-

'मूक प्रणय से सधुर व्यथा से स्वप्नलोक के से आह्वान

वे आए चुपचाप सुनाने तब मधुमय मुरली की तान।'

आत्मा और परमात्मा के अद्वैतत्व के लिए 'बीन और रागिनी' का प्रतीक उनकी अभिनव कल्पना एक सुंदर उदाहरण है। उनकी यह भावना कोरे दार्शनिक ज्ञान या तत्त्व चिंतन पर आधारित नहीं है अपितु उसमें हृदय का भावात्मक योग भी लक्षित होता है-

'मैं तुमसे हूँ एक-एक है जैसे रश्मि प्रकाश

मैं तुमसे हूँ भिन्न-भिन्न ज्यों घन से तड़ित विलास ।'

भाषा-शैली

महादेवी जी का कुछ प्रारंभिक कविताएँ ब्रजभाषा में हैं, किंतु बाद का संपूर्ण रचनाएँ खड़ी बोली में हुई हैं। महादेवी जी की खड़ी बोली संस्कृत मिश्रित है। वह मधुर कोमल और प्रवाह पूर्ण हैं। उसमें कहीं भी नीरसता और कर्कशता नहीं। वैसे महादेवी जी की भाषा सरल है, किंतु सूक्ष्म भावनाओं के चित्रण में वह संकेतात्मक होने के कारण कहीं-कहीं अस्पष्ट भी हो गई हैं। शब्द चयन अत्यंत सुंदर है, किंतु भाषा में कोमलता और मधुरता लाने के लिए कहीं-कहीं शब्दों का अंग-भंग अवश्य मिलता है। जैसे- आधार का अधार, अभिलाषाओं का अभिलाषे आदि। महादेवी जी की शैली में निरंतर विकास होता रहा है। 'नीहार' में उनकी शैली प्रारंभिक अवस्था में है। इस प्रारंभिक अवस्था की शैली में भाव कम हैं, शब्द अधिक। 'नीरजा' की शैली में भाव और भाषा की समानता है। 'दीपशिखा' की रचना में उनकी शैली प्रौढ़ हो गई है और थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कहने की क्षमता आ गई है। भावों को मूर्त रूप देने में महादेवी जी अत्यंत कुशल

थीं। उन्होंने अपनी कविताओं में प्रतीकों और संकेतों का आश्रय अधिक लिया है। अतः उनकी शैली कहीं-कहीं कुछ जटिल और दुरूह हो गई है और पाठक को कविता का अर्थ समझने में कुछ परिश्रम करना पड़ता है।

कल्पना, भावना और पीड़ा

महादेवी जी की सृजन प्रक्रिया विशुद्ध भावात्मक रही है। उनकी धारणाओं को युग के विभिन्न वाद परिवर्तित नहीं कर सके हैं। उन्होंने किसी एक दर्शन को केंद्र नहीं बनाया। जिसे जीवन अथवा समाज के लिए उपयुक्त समझा उसे आत्मसात कर लिया। महादेवी जी विशुद्ध रूप से भारतीय संस्कृति की पोषक होने के कारण उनकी समस्त काव्य कृतियों में उसका प्रभाव परिलक्षित होता है। वे छायावाद का मूल दर्शन सर्वात्मवाद को मानती है और प्रकृति को उसका साधन मानती हैं— 'छायावाद ने मनुष्य हृदय और प्रकृति के उस संबंध में प्राण डाल दिए जो प्राचीनकाल से बिंब प्रतिबिंब के रूप में चला आ रहा था, जिसके कारण मनुष्य को प्रकृति अपने दुःख में उदास और सुख में पुलकित जान पड़ती थी। उन्होंने छायावाद का विवेचन करते हुए प्रकृति के साथ रागात्मक संबंध का प्रतिपादन विशेष रूप से किया है। इसके साथ ही उन्होंने सूक्ष्म या अंतर की सौंदर्य वृत्ति के उद्घाटन पर बल दिया है।

महादेवी की कविता अनुभूति से परिपूर्ण है, पंत और निराला की कवितायें दार्शनिकता के बोझ से दब सी गई हैं, किंतु महादेवी जी के काव्य में ऐसी बात नहीं। उसमें दार्शनिकता होते हुए भी सरसता है। वह सर्वत्र भावना प्रधान है। महादेवी जी के काव्य में संगीतात्मकता का विशेष गुण है। वे गीत लेखिका हैं। गीतों की लय छंदों पर उनका अद्भुत अधिकार हर जगह दिखाई देता है। वे महादेवी माधुर्य भाव की उपासिका हैं। ब्रह्म को उन्होंने प्रियतम के रूप में देखा है। अपने प्रेमपात्र के लिए उन्होंने 'प्रिय' संबोधन दिया है। उनके गीत उज्ज्वल प्रेम के गीत हैं। इसके द्वारा अपने अंतर की जिस सात्विकता का उन्होंने परिचय दिया है वह उनकी काव्य-गरिमा का आधार स्तंभ है। जब जीवन में दिव्य प्रेम के मधु संगीत के रागिनी झंकृत हुई तब कवयित्री के मन में उसने असंख्य नए स्वप्नों को जन्म दिया—

'इन ललचाई आँखों पर पहरा था जब ब्रीड़ा का

साम्राज्य मुझे दे डाला उस चितवन ने पीड़ा का।'

चिर तृप्ति आत्मा युग-युग से सर्वविश्वव्यापी परमात्मा से मिलन के लिए व्याकुल रही है। महादेवी जी की वेदनानुभूति संकल्पात्मक अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति है। 'मिलन का मत नाम लो, मैं विरह में चिर हूँ कहकर वे इसी विरह को जीवन की साधना मानती है। उन्होंने पीड़ा की महत्ता ही घोषित नहीं की उसका सुखद पक्ष भी स्पष्ट किया है। उनके सुख का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। जब दुःख अपनी अंतिम सीमा तक पहुँच जाता है तब वही दुःख सुख का रूप धारण कर लेता है।

'चिर ध्येय यही जलने का ठंडी विभूति हो जाना

है पीड़ा की सीमा यह दुख का चिर सुख हो जाना'

छायावादी कहे जाने वाले कवियों में महादेवी जी ही रहस्यवाद के भीतर रही हैं। उस अज्ञात प्रियतम के लिए वेदना ही उनके हृदय का भावकेन्द्र है जिससे अनेक प्रकार की भावनाएँ, छूट छूटकर झलक मारती रहती हैं। वेदना से इन्होंने अपना स्वाभाविक प्रेम व्यक्त किया है, उसी के साथ वे रहना चाहती हैं। उसके आगे मिलनसुख को भी वे कुछ नहीं गिनतीं। वे कहती हैं कि दृ मिलन का मत नाम ले मैं विरह में चिर हूँ। इस वेदना को लेकर इन्होंने हृदय की ऐसी अनुभूतियाँ सामने रखी हैं जो लोकोत्तर हैं। कहाँ तक वे वास्तविक अनुभूतियाँ हैं आर कहाँ तक अनुभूतियों की रमणीय

कल्पना है, यह नहीं कहा जा सकता। एक पक्ष मा अनंत सुषमा, दूसरे पक्ष में अपार वेदना, विश्व के छोर हैं जिनके बीच उसकी अभिव्यक्ति होती है—

यह दोनों दो ओरें थीं संसृति की चित्रपटी की
उस बिन मेरा दुख सूना मुझ बिन वह सुषमा फीकी।

पीड़ा का चसका इतना है कि—

तुमको पीड़ा में ढूँढा तुममें ढूँढूँगी पीड़ा।

वे दुःख को जीवन की स्फूर्ति तथा प्रेरणा तत्व मानती हैं। उनकी दृष्टि में वेदना का महत्व तीन कारणों से है— वह अंतःकरण को शुद्ध करती है। प्रिय को अधिक निकट लाती है और प्रियतम की शोभा भी उसी पर आधारित है। अतः उनके काव्य में दुःख के तीन रूप मिलते हैं निर्माणात्मक, करुणात्मक और साधनात्मक। वे बौद्धों के नैराश्यवाद को स्वीकार नहीं करतीं। उन्होंने दुःख को मधुर भाव के रूप में स्वीकार किया है जिसमें वह अलौकिक प्रिय के लिए दीप बनकर जलना चाहती है—

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल

युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल, प्रियतम का पथ आलोकित करा।'

उनके अनुसार दुःख जीवन का ऐसा काव्य है जो समस्त विश्व को एक सूत्र में बाँधने की क्षमता रखता है। उनका दुःख यष्टिपरक न होकर समष्टिपरक रहा है। उन्होंने कहा है व्यक्तिगत सुख विश्ववेदना में घुलकर जीवन को सार्थकता प्रदान करता है और व्यक्तिगत दुःख विश्व सुख में घुलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करता है। उनका संदेश है—

'मेरे हँसते अधर नहीं, जग की आँसू लड़ियाँ देखो,

मेरे गीले पलक छुओ मत मुझाई कलियाँ देखो।'

महादेवी वर्मा के काव्य में रहस्यवादी चित्रण एवं अवस्थाएँ जिज्ञासा:

प्राचीन काल में आर्यों ने सम्पूर्ण सृष्टि में क्रियाशील प्राकृतिक शक्तियों को देवरूप में ग्रहण किया था। उन्होंने व्यक्त जगत के बीच अनेक रूपों और क्रियाओं में अभिव्यक्त प्राकृतिक शक्तियों की कल्पना एक समष्टि शक्ति के रूप में की थी। अतः स्वाभाविक रूप से उस परम शक्ति को जानने की इच्छा जागृत होती है।

प्रेम भावना

प्रेम भावना मानव की शाश्वत प्रवृत्ति है। यह अनादि काल से चली आ रही है और चलती रहेगी। छायावादी काव्य में भी प्रेमभावना का रूप दिखायी देता है। किन्तु उसमें न तो रीतियुगीन प्रणय-भावना की स्थापना है, और न द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता। द्विवेदी युग में श्रृंगार रस के विरोध में जो जिहाद चला, उसने बाह्य और आन्तरिक प्रेम के बहुत से अंशों को अस्पृश्य बना दिया। श्री शोभा का नाम लेना ही अपराध हो गया था। फलतः साहित्य में शक्तिहीन करुण भावुकता के राग अलापे जाने लगे। द्विवेदी युग के कवियों ने कविता के साथ न्याय नहीं किया। उनकी अतित्रय अकमवृत्तात्मक कविता सीधे हृदय से उद्भूत न होकर बुद्धि की वीथियों में चक्कर काटती हुई आगे बढ़ती थी।

परिणामतः कविता शृंगार के अभाव में नीरस हो गयी और उसका हृदय पक्ष दब गया। प्रेमभावना मानव हृदय की स्वाभाविक भूख है। यह सर्वथा लौकिक और शृंगारिकता है। इसमें रति की प्रमुखता होती है। मनुष्य की वंश परम्परा इसी रति-भाव के कारण अक्षुण्य बनी रहती है तथा क्षणिक तृप्ति भी हो जाती है। आदिकाल में स्त्री-पुरुष के यौन सम्बन्ध आज से काफी भिन्न थे। सभ्यता के विकास के साथ ही प्रेम के आदर्शवादी रूप की प्रतिष्ठा हुई और विवाह-प्रथा के द्वारा पति-पत्नी में प्रणय-सम्बन्ध स्थापित हुआ। कोरा कायिक प्रेम तो बर्बर युग की वस्तु है। उसका मानसिक और सांस्कृतिक प्रतिकार प्रत्येक युग में अपने-अपने अनुसार हुआ है। साहित्य में सभी समयों में इसका उल्लेख हुआ है। यह दूसरी बात है कि किसी युग में इसकी धूम मची हो, और किसी युग में निषेध किया गया हो।

विरह वेदना

वेदना भारत के लिए कोई नवीन दर्शन नहीं है। वैदिक युग के बाद से यहाँ दुःखवाद का प्रचार-प्रसार दिखायी देता है। औपनिषदिक ऋषि ने लक्षित किया है कि संसार घृणा के योग्य है, क्योंकि इसमें क्षणमात्र के लिए सुख नहीं है। यह दुःखों से आवृत है जिसमें जीव घंटीयंत्र की भांति ऊपर-नीचे अहर्निश घूमता रहता है। बौद्ध दर्शन के अनुसार दुःख ही आर्य सत्य है। जन्म में दुःख है, जरा में दुःख है, व्याधि में दुःख है, मरण में दुःख है, अप्रिय वस्तु के संयोग तथा प्रिय वस्तु के वियोग में भी दुःख है। महाभारतकार (वेदव्यास जी) के अनुसार इस संसार में सुख की अपेक्षा दुःख का आधिक्य है। गीता में भी मानव जीवन को अशाश्वत और दुःखों का आलय तथा अनित्य सुख-रहित कहा गया है। अन्तिम दुःखद परिभाषा के कारण अन्त में सुख के निष्ठ हो जाने के विचार से विवेकियों को प्रत्येक वस्तु दुःखदायी ज्ञात होती है। जीवन की इस दुःखस्वरूपता के कारण उसका सर्वत्र प्रखार दिखायी देता है।

साहित्य में यही दुःखवाद "वेदनानुभूति" की संज्ञा से अभिहित हुआ है। जीवन और जगत् पर इसकी छाया प्रारम्भ से चली आ रही है और आज भी किसी-न-किसी रूप में दृष्टिगोचर होती है। अतः वेदनानुभूति की व्यापकता भारतीय जीवन-दर्शन का प्रमुख आधार है। छायावाद-युग में सर्वत्र वेदनानुभूति की तीव्रता विद्यमान है। इस वेदना का मानव जीवन में इतना महत्व है जितना कि आनन्द का। मनुष्य अपने सभी कार्य सुख प्राप्ति के लिए करता है, किन्तु दुःख उसका पीछा नहीं छोड़ता है। इसलिए उसे जीवन में वेदना और निराशा का सामना करना पड़ता है। छायावादी काव्यधारा की यह वेदनानुभूति कवियों की वैयक्तिकता और संवेदनशीलता का परिणाम है। इसके साथ ही उस काल की कुण्ठा, क्षोभ, अभाव तथा सामाजिक विषमता का भी पूर्ण रूप से प्रभाव लक्षित होता है।

सन्दर्भ

1. अतीत के चलचित्र, पृष्ठ 15, 16, महादेवी वर्मा।
2. आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य का स्वरूप और विकास, पृष्ठ 149, डॉ. आशा किशोर।
3. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ डॉ. नामवर सिंह, पृष्ठ 50।
4. काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ -
5. आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ डॉ. नगेन्द्र, पृष्ठ 13।
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 330, आचार्य दुर्गाशंकर मिश्र।
7. लहर, पृष्ठ 16, जयशंकर प्रसाद।
8. कामायनी, पृष्ठ 24-25, जयशंकर प्रसाद।
9. संस्कृति और साहित्य, पृष्ठ 35, डॉ. रामविलास शर्मा।
10. दीपशिखा, पृष्ठ 53, महादेवी वर्मा।

11. छायावाद युग, पृष्ठ 65, डॉ. शम्भूनाथ सिंह।
12. छायावाद का पतन, पृष्ठ 119, डॉ. देवराज ।
13. छायावादी कवियों का सांस्कृति दृष्टिकोण, पृष्ठ 387, डॉ. प्रमोद सिन्हा।
14. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 550, डॉ. नगेन्द्र ।
15. महादेवी: आस्था और अन्य निबन्ध, पृष्ठ 26, महादेवी वर्मा।
16. महादेवी: नया मूल्यांकन, पृष्ठ 65, डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त।
17. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 116, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ।
18. महादेवी का विवेचनात्मक गद्य, पृष्ठ 217, महादेवी वर्मा।
19. जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ 76, नन्ददुलारे बाजपेयी।
20. आधुनिक हिन्दी कविता में गीति-तत्व, पृष्ठ 303, डॉ. सच्चिदानंद तिवारी।
21. छायावाद युग, पृष्ठ 78, डॉ. शम्भूनाथ सिंह।
22. जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ-23-25, नन्ददुलारे बाजपेयी।
23. सुखाद्वहृतारं दुःखं जीविते नास्ति संशयः शान्तिपर्व, 205/61 -महाभारत,
24. छायावाद युग, पृष्ठ 72, डॉ. शम्भूनाथ सिंह।
25. आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य का स्वरूप और विकास, पृष्ठ 154, डॉ. आशा किशोर।